नवभारत टाइम्स NBT Delhi Times masalamix
FRIDAY, 19 JULY 2024 | ADVERTORIAL, ENTERTAINMENT PROMOTIONAL FEATURE
Follow us on: twitter.com/DelhiTimesHindi facebook.com/DelhiTimesMasalaMix instagram.com/delhitimesmasalamix

खुद कर रहा है या AI की मदद से? बच्चे का होमवर्क कौन कर रहा है?

दिल्ली के स्कूलों में AI के बढ़ते इस्तेमाल के बीच स्कूली बच्चे अपने होमवर्क में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस की मदद लेने लगे है। इससे पैरंट्स के मन में चिंता है कि कहीं बच्चे किताबों से ना दूर हो जाएं। आखिर इसके इस्तेमाल का बच्चों पर लंबे समय में क्या असर पड़ेगा, हमने एक्सपर्ट्स से जानने की कोशिश की :

Shubham.Tripathi@timesofindia.com

ड्राइंग बनानी हो या फिर गणित की किसी प्रॉब्लम का हल निकालना हो, 9वीं क्लास में पढ़ने वाले तेजस भारती अपने होमवर्क में AI की मदद लेते है। वह कई सवालों के जवाब के लिए वॉट्सऐप में आने वाले मेटा AI का भी इस्तेमाल करते है। केवल तेजस ही नहीं, बल्कि स्कूलों में पढ़ने वाले तमाम बच्चे अपने होमवर्क को करने के लिए AI का इस्तेमाल करने लगे है। दूसरी ओर टीचर्स भी अब इस वजह से होमवर्क चेक करते हुए सतर्कता बरत रहे हैं।

'कमांड देते हैं, उत्तर अलग हो जाता है'

एक प्राइवेट स्कूल में कॉमर्स पढ़ने वाले 12वीं क्लास के स्टूडेंट आरव शर्मा बताते हैं कि अगर मुझे कोई पैराग्राफ बनाना है या सवाल का उत्तर देना है, तो मैं AI का इस्तेमाल करता हूं। मैं उसे कमांड देता हूं और वह उसी हिसाब से जवाब को एडिट भी करता है। मैं उससे फोटो, ड्राइंग और ग्राफ बनाने में भी मदद लेता हूं। वहीं तेजस बताते है कि वह शतरंज जैसे खेल खेलते हुए भी AI की मदद लेते हैं। हालांकि वह यह भी कहते हैं कि AI से अपने स्तर के जवाब लेना आसान नहीं है। उसे अलग-अलग तरह की डायरेक्शन देनी पड़ती है, अपनी क्लास बतानी पड़ती है, तब जाकर वह सही उत्तर देता है। तेजस और आरव दोनों का कहना है कि उनके साथ के कई बच्चे अपने स्कूल होमवर्क में AI की मदद ले रहे है। तो क्या उनके उत्तर एक जैसे नहीं होते? आरव कहते हैं, 'AI से लिए गए उत्तर सभी छात्रों के अलग होते है, क्योंकि सब अलग-अलग प्रॉम्प्ट डालते हैं। फिर हम लोग उत्तर को एडिट भी करवाते है, तो उस वजह से भी जवाब में फर्क हो जाता है।'

पैरंट्स टेंशन में, टीचर्स हुए सतर्क

हालांकि पैरंट्स इस बात से सहमत है कि भविष्य में AI का आना जरूरी है, लेकिन वे चिंतित भी हैं कि कहीं इसकी वजह से बच्चों की किताबों से दूरी ना हो जाए। इस बारे में एक पैरंट दिलीप कहते है, 'छात्रों को AI के बारे में सीखना चाहिए। लेकिन मेरी बेटी अपने सवालों के जवाब AI से पूछती है। मुझे यह चिंता है कि कहीं किताबों से उसकी दूरी ना बन जाए क्योंकि किताबों में सही और पूरे कॉन्सेप्ट के साथ चैप्टर में जानकारी दी होती है, जबकि AI पर आप जितना उत्तर मांगेंगे, उतना ही जवाब मिलेगा।' दूसरी ओर टीचर्स भी अब सतर्क हो गए है और वे AI से दिए गए उत्तरों को पहचानने की कोशिश करने लगे है। एमएम पब्लिक स्कूल की प्रिंसिपल रूमा पाठक कहती हैं, 'हम बच्चों को AI से होमवर्क करने को प्रोत्साहित नहीं करते। फिर टीचर्स को सब बच्चों की योग्यता का पता होता है। ऐसे में पता लग जाता है कि कौन सा बच्चा उत्तर खुद लिखकर लाया है, किसने बाहर से मदद ली है और किसने AI की मदद ली है।'

लेकिन बच्चों के विकास में मददगार

हालांकि एक्सपर्ट्स का कहना है कि अगर लंबे समय तक AI का इस्तेमाल किया जाए, तो बच्चों की सोचने की क्षमता पर बुरा असर पड़ सकता है। होमवर्क में AI के इस्तेमाल पर पैरंटिंग एक्सपर्ट साइकॉलजिस्ट गीतांजलि शर्मा कहती हैं, 'जैसे हम लोग पहले कुंजी का इस्तेमाल करते थे, वैसे ही अब AI है। मगर जैसे कुंजी सिर्फ सवालों के उत्तर देती थी ना कि पूरी बात समझाती थी, वैसे ही AI भी है। लंबे समय तक इसका इस्तेमाल किया जाए, तो इससे हमारी प्रॉब्लम सॉल्व करने की जो क्षमता होती है, धैर्य क्षमता, कॉन्फ्लिक्ट रिजॉल्यूशन और ह्यूमन ब्रेन डेवलपमेंट जैसी तमाम चीजों पर असर पड़ेगा। तो आगे जाकर लाइफ में बहुत सारी समस्याओं का सामना करना पड़ सकता है।' वहीं मॉडर्न पब्लिक स्कूल की प्रिंसिपल डॉ. अल्का कपूर कहती हैं कि फिलहाल तो बच्चों की राइटिंग पर इसका असर नहीं नजर आ रहा है। लेकिन यह सच है कि बच्चों को AI इस्तेमाल में संतुलन बनाना सिखाना होगा। बच्चों को ज्यादा रीडिंग करवानी होगी। यह काफी हद तक स्कूल पर निर्भर करता है।'

टीचर्स को सब बच्चों की योग्यता का पता होता है। इसलिए पता लग जाता है कि कौन सा बच्चा उत्तर खुल लिखकर लाया है, किसने बाहर से मदद ली है और किसने AI की मदद ली है। बच्चों की काउंसलिंग भी की जाती है।

\- रूमा पाठक, एमएम पब्लिक स्कूल

अगर लंबे समय तक AI का इस्तेमाल किया जाए, तो आने वाले दिनों में इससे हमारी प्रॉब्लम सॉल्व करने की क्षमता, धैर्य क्षमता, कॉन्फ्लिक्ट रिजॉल्यूशन और ह्यूमन ब्रेन डेवलपमेंट जैसी तमाम चीजों पर असर पड़ेगा।

\- गीतांजलि शर्मा, पैरंटिंग एक्सपर्ट

NBT
14 जुलाई 2024

दिल्ली के स्कूल अब AI की पढ़ाई में एक कदम आगे जाकर कोडिंग, मैपिंग और वर्चुअल रिएलिटी से वर्चुअल टूर तक करवाने लगे हैं। पेश है एक रिपोर्ट:

AI और VR के जरिए कोडिंग-मैपिंग क्या

चंद्रयान तक पहुंचे स्कूली बच्चे

Photos: Adobe Stock

Shubham.Tripathi@timesgroup.com

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस यानी AI का जोर इन दिनों चारों ओर है। तमाम क्षेत्रों में कई तरीकों से इस पर काम हो रहा है और माना जा रहा है कि AI ही फ्यूचर है। इसी को देखते हुए दिल्ली के स्कूलों में भी आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस का इस्तेमाल और पढ़ाई शुरू हो गई है। इसके तहत एक ओर बच्चों को नए अंदाज में एजुकेशन दी जा रही है तो वहीं दूसरी ओर इससे पैरंट्स भी काफी खुश नजर आ रहे हैं। यहां तक कि बच्चों का विकास जांचने के लिए भी स्कूल इसका इस्तेमाल करने लगे हैं।

वर्चुअल रिएलिटी से चंद्रयान की सैर।

कुछ स्कूलों में इसकी पढ़ाई शुरू की गई है तो वहीं कुछ स्कूल इसके जरिए बच्चों की क्रिएटिविटी को भी बाहर ला रहे हैं। इस बारे में मॉडर्न पब्लिक स्कूल की प्रिंसिपल डॉक्टर अल्का कपूर बताती हैं कि हम अपने रोजमर्रा के कामों में कई तरीकों से AI का इस्तेमाल कर रहे हैं। हम यूनेस्को के मॉडल स्कूल भी बन चुके हैं। और सिर्फ AI ही नहीं बल्कि हम अपनी शिक्षा में VR यानी वर्चुअल रिएलिटी का भी इस्तेमाल कर रहे हैं। इनके जरिए हम बच्चों की प्रोग्रेस देखते हैं और उन्हें कॉन्टेंट क्रिएशन और प्रोजेक्ट बेस्ड लर्निंग करवाते हैं। इससे बच्चों की शिक्षा में क्या मदद मिल रही है? इस बारे में डॉक्टर अल्का कपूर बताती हैं, 'हम बच्चों को बता रहे हैं कि इसका इस्तेमाल कैसे करना है। हमारे स्कूल के बच्चों ने हॉलिडे होमवर्क में भी इसकी मदद ली। हमने इसके जरिए उनके क्रिएटिव आइडियाज को कॉमिक्स बनवाई है। इसके जरिए वह स्कूल के पोस्टर और अन्य क्रिएटिव चीजें बनाते हैं। वर्चुअल रिएलिटी के जरिए भी हम बच्चों को सब्जेक्ट समझाते हैं, जैसे कि चंद्रयान के अंदर क्या है? या फिर रॉकेट कैसे लॉन्च होता है? ऐसी चीजें बच्चे जब VR के जरिए देखते हैं तो उन्हें ज्यादा समझ आती हैं।' वहीं एमएम पब्लिक स्कूल की प्रिंसिपल रूमा पाठक बताती हैं, 'हम विषय के तौर पर AI की पढ़ाई करवा रहे हैं। इसमें हम छठी से आठवीं क्लास तक कोडिंग करवाते हैं, फिर 9वीं और 10वीं में पाइथन कोडिंग करवाते हैं। 11वीं और 12वीं में भी इसे पढ़ाया जा रहा है। टीचर्स भी इस सब्जेक्ट को अच्छे से समझ और इस्तेमाल कर रहे हैं।' अल्का बताती हैं कि इसके जरिए हम बच्चों की आंसरशीट की मैपिंग करके यह भी समझते हैं कि कौन सा टॉपिक किस बच्चे को समझ नहीं आया।

पैरंट्स खुश, कॉम्पिटीशन भी शुरू

खास बात यह है कि बच्चे भी इस सब्जेक्ट में बहुत इंट्रेस्ट ले रहे हैं। 9वीं क्लास में पढ़ने वाले तेजस बताते हैं, 'हमारे स्कूल में AI के बारे में बताया जाने लगा है। यह काफी दिलचस्पी वाला सब्जेक्ट है। खासकर यह काफी काम आसान कर देता है।' रूमा पाठक बताती हैं कि स्कूल के कई बच्चे इस सब्जेक्ट में काफी रुचि दिखा रहे हैं क्योंकि इसकी मदद से बच्चे सब्जेक्ट को अच्छा सीख रहे हैं। वह कहती हैं कि इसके चलते अब स्कूल लेवल पर इसके कॉम्पिटीशन भी आयोजित होने लगे हैं। इन सब वजहों से बच्चों के पैरंट्स भी काफी खुश हैं। इस बारे में एक छात्र के पिता दिलीप कुमार कहते हैं, 'AI के बारे में आजकल काफी चर्चा है और कई क्षेत्रों में इसका इस्तेमाल हो रहा है। लोग कह रहे हैं कि भविष्य में यह बड़ा क्षेत्र बनेगा और इसमें ढेर सारी नौकरियां भी होंगी। तो इससे भागकर तो नहीं रहा जा सकता। मैं खुद छोटे-मोटे स्तर पर AI का इस्तेमाल करता हूं। इसलिए खुश हूं कि स्कूलों में भी इसे पढ़ाया जा रहा है।'

> हमारे स्कूल में बच्चों को AI और वर्चुअल रिएलिटी के जरिए पढ़ाया जा रहा है। इसके अलावा हमने अपने स्कूल में इंटर स्कूल AI सेशन भी आयोजित किया था।
>
> – डॉ. अल्का कपूर, प्रिंसिपल, मॉडर्न पब्लिक स्कूल

> AI के तहत हम छठी से आठवीं क्लास तक कोडिंग करवाते हैं, फिर 9वीं और 10वीं में पाइथन कोडिंग करवाते हैं। 11वीं और 12वीं में भी इसे पढ़ाया जा रहा है।
>
> – रूमा पाठक, प्रिंसिपल, एमएम पब्लिक स्कूल

मगर संतुलन बनाना है बहुत जरूरी

हालांकि यह भी कहा जा रहा है कि इससे बच्चों की किताब पढ़ने की भावना खत्म हो जाएगी और उनकी क्रिएटिविटी पर भी असर पड़ेगा। मगर इन स्कूलों का कहना है कि इस सब्जेक्ट को पढ़ाने के लिए बैलेंस बनाना जरूरी है। डॉक्टर अल्का कपूर कहती हैं, 'इस सब्जेक्ट से बच्चों की क्रिएटिविटी निखरती है तो इसका कोई नेगेटिव इम्पैक्ट तो फिलहाल नहीं नजर आ रहा है। लेकिन यह भी सच है कि हमें इस विषय को पढ़ाते समय संतुलन बनाए रखना होगा। यह काफी कुछ स्कूल पर निर्भर करता है कि वह रीडिंग को कितना बढ़ावा और अहमियत दे रहा है।' रूमा पाठक का भी कुछ ऐसा ही कहना है। वह कहती हैं, 'हम AI के जरिए सारे सॉल्यूशन निकालने को प्रोत्साहित नहीं करते हैं। फिर समय-समय पर उन्हें बताया जाता है कि कैसे AI का इस्तेमाल करना है ताकि इसका जरूरत से ज्यादा इस्तेमाल न किया जाए। आजकल के बच्चे समझदार हैं और इस बात को समझते हैं। हम उन्हें बताते हैं कि आप अपना भविष्य इसके सहारे नहीं छोड़ सकते हैं क्योंकि बोर्ड एग्जाम और तमाम चीजों में AI के इस्तेमाल की इजाजत नहीं होती।'